आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023

दैनिक समाचार–पत्र

प्रेषण :- कार्यालय चेतक सर्कल पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांक:-प्रतिदिन

मन के जीते जीत सदा

• वर्ष - 10 • अंक-2683 • उदयपुर, शनिवार 30 अप्रैल, 2022 • प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन • कुल पृष्ठ : 4 • मूल्य : 1 रुपया

आपका अपना नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर

सिमलीगुड़ा (उड़ीसा) में दिव्यांग सेवा

नारायण सेवा संस्थान वर्षो से आपके आशीर्वाद से दिव्यांगजन सेवा में रत है। पूरे देश में स्थान–स्थान पर जाकर इसकी शाखाओं द्वारा दिव्यांगजन सहायता शिविर आयोजित किये जा रहे हैं। इस पुण्य कार्य को गति देने के लिये एक और विशाल निःशुल्क दिव्यांग जाँच, उपकरण वितरण तथा कृत्रिम अंग माप शिविर 12 अप्रेल 2022 को कल्याण मण्डपम सिमलीगुड़ा, जिला कोराटपुर (उड़ीसा) में संपन्न हुआ। शिविर सहयोगकर्ता लॉयन्स क्लब सिमलीगुड़ा, उड़ीसा रहे। शिविर में कुल रजिस्ट्रेशन 80, कृत्रिम अंग वितरण 59, कैलिपर वितरण 21 की सेवा हुई।

उक्त शिविर में मुख्य अतिथि श्रीमान् राजेन्द्र कुमार जी पात्रों (अध्यक्ष नगर पालिका, सिमलीगुड़ा), अध्यक्षता श्रीमान् आनंद जी पाटवानिया (अध्यक्ष लॉयन्स क्लब, सिमलीगुड़ा), विशिष्ट अतिथि श्रीमान् मनोज कुमार जी पात्रों (कोशाध्यक्ष लॉयन्स क्लब, सिमलीगुड़ा), श्रीमान् आनन्द जी सेनापति (उपाध्यक्ष लॉयन्स क्लब, सिमलीगुड़ा), श्रीमती सुमन्या जी (प्रोजेक्ट मेनेजर चिल्ड ऑफिसर, सिमलीगुड़ा) रहे।

डॉ. रामनाथ जी ठाकुर (पी.एन.डो.), श्री नाथू सिंह जी (टेक्निशियन) सहित शिविर टीम में श्री लालसिंह जी भाटी (शिविर प्रभारी), श्री मुकेश जी त्रिपाठी (सह–प्रभारी), श्री बहादुरसिंह जी (सहायक) ने भी सेवायें दी।

मालेरकोटला (पंजाब) में नारायण सेवा

नारायण सेवा संस्थान का ध्येय है कि दिव्यांग भी दौड़ेगा–अपनी लाठी छोड़ेगा। इस क्रम में संस्थान की शाखाओं व दानदाताओं के सहयोग से दिव्यांग जाँच, उनका ऑपरेशन के लिये चयन तथा कृत्रिम अंगों का माप लेना व अंग लगाने का कार्य गति पर है। ऐसा ही एक और विशाल निःशुल्क दिव्यांग जाँच, उपकरण वितरण तथा कृत्रिम अंग माप शिविर 17 अप्रेल 2022 को श्री हनुमान मंदिर, तालाब बाजार, मालेरकोटला में हुआ। शिविर सहयोगकर्ता महावीर इन्टरनेशनल एवं मानव निश्काम सेवा समिति रजि.एवं गुरु सेवक परिवार, मालेरकोटला रहे। शिविर में कुल रजिस्ट्रेशन 256, कृत्रिम अंग माप 82, कैलिपर माप 15 की सेवा हुई तथा 17 का ऑपरेशन हेतु चयन किया गया।

उक्त शिविर में मुख्य अतिथि श्रीमान् लोकेश जी जैन (प्रधान), अध्यक्षता श्रीमान् नरेश जी सिघंला (दिनेश इन्डस्ट्रीज ऑनर), विशिष्ट अतिथि श्रीमान् रमेश जी जैन लाडिया (प्रधान जैन समाज), श्रीमान्

राजेन्द्र सिंह जी (टिनानगल सरपंच), श्रीमान् प्रदीप जी जैन (चेयरमेन मानव निश्काम), श्रीमान् मोहन जी श्याम (कोशाध्यक्ष) रहे।

डॉ. सिद्धार्थ जी लांबा (अस्थि रोग विशेषज्ञ), श्री गौरव जी (पी.एन.डो), श्री नरेश जी वैष्णव (टेक्निशियन) सहित शिविर टीम में अखिलेश जी (शिविर प्रभारी), श्री सुनिल जी श्रीवास्तव (शिविर सह प्रभारी), श्री प्रकाश जी डामोर, श्री मनीश जी हिन्डोनिया (सहायक), श्री प्रवीण जी यादव (कैमरामेन) ने भी अमूल्य सेवायें दी।

NARAYAN SEVA SANSTHAN
Our Religion is Humanity

विशाल नि:शुल्क दिव्यांग जांच,
ऑपरेशन चयन एवं
कृत्रिम अंग (हाथ-पांव) माप शिविर

दिनांक 01 मई, 2022

▪ रोटरी क्लब पाली, मैन रोड़, बापूनगर के पास, पाली (राजस्थान)

दिनांक 02 मई, 2022

▪ नागपुर (महाराष्ट्र)
▪ गजरोला, अमरोहा (उत्तरप्रदेश)

इस दिव्यांग भाग्योदय शिविर में आपश्री सादर आमंत्रित है एवं अपने क्षेत्र में जो दिव्यांग भाई बहन है उन तक अधिक से अधिक सूचना देवें।

पू. कैलाश जी 'मानव'
संस्थापक चेयरमैन, नारायण सेवा संस्थान

'सेवक' प्रशान्त भैया
अध्यक्ष, नारायण सेवा संस्थान

+91 7023509999
+91 2946622222
www.narayanseva.org | info@narayanseva.org

NARAYAN SEVA SANSTHAN
Our Religion is Humanity

स्नेह मिलन समारोह

दिनांक : 1 मई, 2022

स्थान

होटल एस के रेजीडेन्सी, 418, अल्बर्ट रोड, केनाल ऑफिस के सामने अमृतसर, पंजाब, सांय 4.00 बजे

होटल सूर्या एण्ड बेंकेट हॉल, आदर्श कॉलोनी, रामपुर, उ.प्र., सांय 4.30 बजे

लॉयन्स क्लब, जलविहार कॉलोनी, मरीन ड्राइव के पास, रायपुर, छत्तीसगढ़, सांय 5.00 बजे

इस स्नेह मिलन समारोह में आपश्री सादर आमंत्रित है एवं अपने क्षेत्र में जो दिव्यांग भाई बहन है उन तक अधिक से अधिक सूचना देवें।

पू. कैलाश जी 'मानव'
संस्थापक चेयरमैन, नारायण सेवा संस्थान

'सेवक' प्रशान्त भैया
अध्यक्ष, नारायण सेवा संस्थान

+91 7023509999
+91 2946622222
www.narayanseva.org | info@narayanseva.org

मायने

दो साथी एक रेस्तरां में गये। पहले डोसा खाया, फिर दो लस्सी मंगाई। एक साथी ने लस्सी पीनी शुरू ही की थी कि उसे गिलास में बाल दिखा। उसने वहाँ के लड़के को बुला कर कहा, 'देखो इसमें कितना बड़ा बाल है?' इधर दीजिए साहब, दूसरा लेकर आता हूँ।' बालक ने सहमे हुए स्वर में कहा। 'तुम लोग कुछ नहीं देखते, सफाई का बिल्कुल ध्यान नहीं रखते हो।' दूसरा साथी कुछ तेज आवाज में बोला तो काउंटर पर बैठे दुकानदार ने कहा, 'क्या हुआ साहब?' ग्राहक ने अपनी शिकायत दुकानदार को बताई। 'ठीक है सर, आप उसे मत पीजिए। वहीं छोड़ दीजिए।' इसी के साथ उस नौकर से दूसरा गिलास लाने का आदेश दिया। दुकानदार ने उस लड़के को बुलाया, 'क्यों बे ! तेरे को दिखाई नहीं पड़ता। लस्सी में बाल कहां से आ गया? हरामखोर बैठे–बैठे तीस रुपये का नुकसान करा दिया। दुकानदार ने रजिस्टर में उसका खाता खोला और उसके नाम तीस रुपये चढ़ा दिये फिर बोला, 'ठीक है जा, आगे से ध्यान रखना। तेरी पगार से तीस रुपये कट जाएँगे। तुम लोगों की लापरवाही से मैं अपना धंधा चौपट नहीं करूँगा।'

दूसरी ओर बैठा एक ग्राहक चुपचाप सारी गतिविधियों को गौर से देख रहा था। थोड़ी देर में काउंटर पर आया और पूछा, 'कितना बिल हुआ?' 'सत्तर रुपये!' दुकानदार के कहने से पहले ही उस नौकर ने बताया, जो उसकी मेज पर खाना रख रहा था। ग्राहक ने सौ रुपये का एक नोट देते हुए दुकानदार से कहा, 'पूरा–पूरा लीजिए, सत्तर मेरे और तीस रुपये, जो आपने इस नौकर के खाते में चढ़ाया है, उसे काट दीजिएगा।

उसके जीवन में तीस रुपये बहुत मायने रखते हैं।'

चरित्र की सीढ़ियां

एक आदमी अपने हाथ में दो ऊंचे डण्डे लेकर एक महल की ऊपरी मंजिल पर चढ़ने का प्रयास कर रहा था। दूसरे आदमी ने देखा तो पूछा, "तुम यह क्या कर रहे हो?" वह बोला, "मेरे पास 'सम्यक् ज्ञान' और 'सम्यक् दर्शन' के दो डंडे हैं। मैं इनके सहारे इस महल की ऊपरी मंजिल पर पहुंचना चाहता हूं।" पहले ने कहा, "मैंने बड़ी मेहनत से इन्हें प्राप्त किया है। क्या सारा श्रम व्यर्थ जायगा?"

दूसरे आदमी ने कहा, "तुम्हारा श्रम व्यर्थ नहीं जाएगा, यदि तुम सम्यक् ज्ञान और सम्यक् दर्शन के इन दो खड़े डंडों में 'सम्यक् चरित्र' की आड़ी सीढ़ियां लगा सको।" 'सम्यक् ज्ञान' और 'सम्यक् दर्शन' के दो खड़े डंडों में 'सम्यक् चरित्र' की आड़ी सीढ़ियां लगाने से एक ऐसी नसैनी तैयार हो जाती है, जिस पर एक–एक कदम उठाकर आदमी अपने लक्ष्य तक पहुंच सकता है।

दिव्यांग, अनाथ, असहाय एवं वंचितजन की सेवा में सतत सक्रिय संस्थान के विभिन्न सेवा प्रकल्पों में करें सहयोग

कृपया अपने परिजनों या स्वयं के जन्मदिन, शादी की वर्षगांठ पुण्यतिथि को बनायें यादगार..

जन्मजात पोलियो ग्रस्त दिव्यांगों के ऑपरेशनार्थ सहयोग राशि

ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि	ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि
501 ऑपरेशन के लिए	17,00,000	40 ऑपरेशन के लिए	1,51,000
401 ऑपरेशन के लिए	14,01,000	13 ऑपरेशन के लिए	52,500
301 ऑपरेशन के लिए	10,51,000	5 ऑपरेशन के लिए	21,000
201 ऑपरेशन के लिए	07,11,000	3 ऑपरेशन के लिए	13,000
101 ऑपरेशन के लिए	03,61,000	1 ऑपरेशन के लिए	5000

निर्धन एवं दिव्यांगों को खिलाएं निवाला

आजीवन भोजन/नाश्ता सहयोग मिति

(वर्ष में एक दिवस 50 दिव्यांग, निर्धन एवं अनाथ बच्चों के लिए भोजन/नाश्ता सहयोग हेतु मदद करें)

नाश्ता एवं दोनों समय भोजन सहयोग राशि	37000/-
दोनों समय के भोजन की सहयोग राशि	30000/-
एक समय के भोजन की सहयोग राशि	15000/-
नाश्ता सहयोग राशि	7000/-

दुर्घटनाग्रस्त एवं जन्मजात दिव्यांगों को दें कृत्रिम हाथ-पैर और सहायक उपकरणों का उपहार

वस्तु	सहयोग राशि (एक नग)	सहयोग राशि (तीन नग)	सहयोग राशि (पाँच नग)	सहयोग राशि (ग्यारह नग)
तिपहिया साईकिल	5000	15,000	25,000	55,000
व्हील चेयर	4000	12,000	20,000	44,000
केलीपर	2000	6,000	10,000	22,000
वैशाखी	500	1,500	2,500	5,500
कृत्रिम हाथ/पैर	5100	15,300	25,500	56,100

गरीब दिव्यांगों को बनाएं आत्मनिर्भर

मोबाइल /कम्प्यूटर/सिलाई/मेहन्दी प्रशिक्षण सौजन्य राशि

1 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 7,500	3 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -22,500
5 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 37,500	10 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -75,000
20 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 1,50,000	30 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -2,25,000

प्रसन्नता है प्रेम का झरना : कैलाश मानव

एक भाई की ऐसी व्यथा है। जब पिताजी की डेथ हुई तब बड़े भाई ने घर पर कब्जा कर लिया। कब्जा ऐसा किया की छोटे भाई और माता को घर से निकाल दिया। अब पूरे घर पर केवल वो राज करते हैं। माता बेचारी सिलाई करती है, छोटा भाई छोटी–मोटी नौकरी।

ये तामसिकता है, ये पशुपना है, ये आदमियों के लक्षण नहीं है – लाला। ये तो आदमी का चोला है, केवल हाथ– पाँव आदमियों के है, लेकिन अन्दर एक राक्षस बैठा हुआ है। अन्दर एक पशु बैठा हुआ है, अन्दर एक सियार बैठा हुआ है। क्या हो गया ? अपनी माता को भी घर से निकाल दिया। ऐसे झगड़ा करते हैं ? ऐसे बात का बतंगड़ करते हैं ? व्यर्थ बात को तिल का ताड़ बना देते हैं ? जब कुछ नहीं होता, वहाँ भी झगड़ा ऐसा करते हैं कि भले आदमी सोचते है कि– इस घर में अब मेरा रहना नहीं होगा। बदल जाइये। सत्संग के प्रभाव को अपने मन में बिठा लीजिये। माता से माफी मांग लीजिये, उनके चरणों में गिर जाइये। आपकी आँखों के आँसुओं से माताजी के चरणों को धो लीजिये। आपके भाई को गले लगा लीजियेगा। ये सम्पति आपके साथ नहीं जायेगी, ये सम्पति यहीं रह जायेगी।

बहनों और भाइयों रामचरितमानस जीवन जीने का महान ग्रन्थ है। गीताजी में कहा है– सर्वधर्म परित्यज्य मायेकं शरणम् व्रज। अपने कर्त्तव्यों को रखते हुए, मेरे प्रति समर्पित करते हुए, अपने भावों को अच्छा बनाते हुए मेरी शरण आजा। ब्रह्म की शरण, ब्रह्म की शरण होते है लाला तो कर्त्तव्य बहुत बढ़िया होते हैं। परित्याग का अर्थ छोड़ना नहीं।

परित्याग का अर्थ है –तूं लालच छोड़ दे। ये विषयों की वासना छोड़ दे। तूं कर्मबुद्धि रख, तूं समता भाव को पुश्ट कर। तूं अपने दृष्टाभाव को पृष्ट कर। भोगवृति छोड़ दे, सर्वधर्म मतलब भोगवृति को छोड़ कर के मेरी शरण में आजा। मैं तेरा उद्धार कर दूंगा। ये श्रीकृष्ण भगवान की कथा, ये मर्यादा पुरुषोतम भगवान श्रीराम की कथा।

धर्म के अर्थ को समझना आवश्यक है

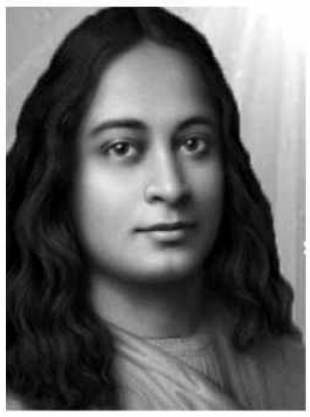

जो ईश्वर को जीवन की परम आवश्यकता के रूप में नहीं खोज रहे वे धर्म के अर्थ को नहीं समझते। सभी लोग धन के पीछे क्यों पड़े रहते हैं ? क्योंकि, वे इस विचार के आश्रित हो गए हैं कि सुखी जीवन की जरूरतों की पूर्ति के लिए धन अतिआवश्यक है। उनको यह बताने की आवश्यकता नहीं है, बस, वे इसे जानते हैं। तब फिर अधिकतर लोग ईश्वर को जानने की आवश्यकता को क्यों नहीं समझ पाते ? क्योंकि उनमें कल्पना शक्ति और विवेक की कमी होती है। जीवन के आरम्भ में मैंने देखा कि कुछ प्रश्नों के ईश्वर परक उत्तर और यहाँ तक कि धर्मशास्त्रों के उत्तर भी आत्मा को पूर्ण रूप से कदापि सन्तुष्ट नहीं कर पाते थे, जब तक कि उनकी सत्यता का बोध, ईश्वर सम्पर्क और उनकी अनुभूति द्वारा न हो जाए उदाहरण के लिए, जब मेरी माँ का स्वर्गवास हुआ और अन्य प्रियजन मुझसे छीने जाने लगे, तो मैंने इसका आन्तरिक रूप से विद्रोह किया, परन्तु कोई भी इसका वह स्पष्टीकरण नहीं दे पाया जो मुझे सन्तुष्ट करता। मैंने निश्चय कर लिया कि मुझे स्वयं अपने प्रयास द्वारा इसका उत्तर प्राप्त करना पड़ेगा। मैंने प्रतिज्ञा की कि मैं इसे बिना समझे स्वीकार नहीं करूँगा। मैं इसका उत्तर उनसे ही प्राप्त करके रहूँगा जो इस सृष्टि के रचयिता हैं। मैंने जीवन के उन रहस्यों को सीधे ईश्वर से प्राप्त किया जिन्हें मैं मन्दिरों और चर्चों की शिक्षाओं से नहीं पा सका था। यदि धर्म मुझे इस बात से सन्तुष्ट नहीं कर सकता कि क्यों कुछ लोग गरीब और कुछ लोग अमीर, कुछ नेत्रहीन और कुछ स्वस्थ पैदा होते हैं, तो यह किस प्रकार मुझे ईश्वर के न्याय में विश्वास दिलाएगा ? भारत के मनीषियों ने ईश्वर से संपर्क प्राप्ति की आन्तरिक अनुभूति के द्वारा जीवन के रहस्यों का उत्तर प्राप्त किया और हमें बताया कि हम भी ऐसा किस प्रकार कर सकते हैं।

- श्री श्री परमहंस योगानंद

सम्पादकीय

विवेक मानव का श्रेष्ठ आभूषण है। यही वह गुण है जो सामर्थ्य में चार चाँद लगा देता है। विवेक के बिना चाहे व्यक्ति कितना भी बलशाली हो, कितना ही धनी हो या कितना ही ज्ञानी क्यों न हो वह कभी भी सफल जीवन, आनंदमय जीवन नहीं जी सकता है। विवेक वह कुंजी है जो सफलता के द्वार का ताला खोलती है। यह विवेकी होने का गुण ही व्यक्ति के व्यक्तित्व में निखार लाता है। विवेक एक क्षमता है जो व्यक्ति को उचित समय पर उचित विचार, सही समय पर सही कार्य तथा सही लोगों से सही व्यवहार करने की प्रेरणा देती है।

विवेक के बीज तो सभी में होते हैं पर उसे पल्लवित, पुष्पित कितने लोग कर पाते हैं, यह सोचने व विश्लेषण का विषय है। यह विवेक सच में सत्संग से जागृत होता है। सद्विचारों वाले लोगों के संग का असर होता है कि हमारा विवेक चैतन्य हो उठता है। इसलिये सद्साहित्य, सद्व्यवहारियों का संग और सद्आचारियों का अनुसरण करके हम अपना विवेक जगाना सीखें।

कुछ काव्यमय

जो विवेक को जगा सका है,
उसने जय का स्वाद चखा है।
यद्यपि सबमें विवेक है भी
पर सोया तो क्या रखा है ?
जब विवेक चेतन हो जाता,
महक उठे मानव का मन।
फिर जीवन में बदलावों की
चल जाती है सफल–पवन।

दान, अपने सौभाग्य का पैगाम

बहुत समय पहले की बात है। रमनपुर राज्य में सुबह–सुबह एक भिखारी भीख मांगने निकला। कई बार घूमने के बाद घर से उसे कुछ अनाज मिला। वह राजपथ की तरफ जाने लगा तो उसने देखा कि सामने से राजा की सवारी आ रही थी।

वह सड़क के एक ओर खड़ा हो गया और सवारी की गुजर जाने की प्रतीक्षा करने लगा। लेकिन राजा की सवारी उसके सामने ही रूक गई। राजा एक पात्र उसके सामने करते हुए बोले, 'मुझे कुछ भीख दे दो।

देखो, मना मत करना। राज्य पर संकट आने वाला है। मुझे किसी ज्योतिषी ने बताया है कि रास्ते में जो भी पहला भिखारी मिले उससे भीख मांग लेना। इससे संकट टल

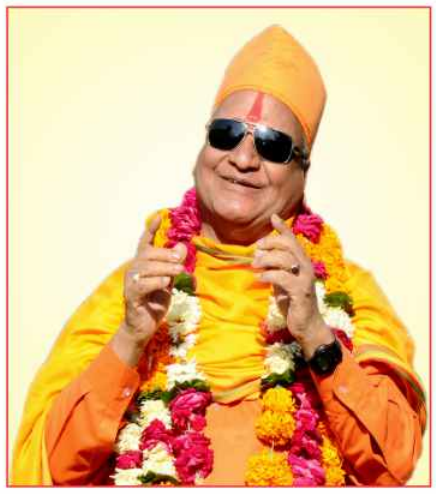

जाएगा। भिखारी आश्चर्य चकित हो गया। उसने अपने झोले में हाथ डाला और एक मुट्ठी अनाज भर लिया। लेकिन उसके मन में लालच आ गया की इतना दे देगा तो झोले में क्या बचेगा। उसने मुट्ठी ढीली की और कुछ अनाज कम करके राजा के पात्र में डाल दिया। घर जाकर पत्नी से बोला, 'आज तो अनर्थ हो गया। राजा को भीख देनी पड़ी। नहीं देता तो क्या करता।' पत्नी ने झोला उल्टा तो कुछ दाने सोने के निकले।

यह देखकर भिखारी बोला, 'काश! सारा अनाज दे देता तो झोले में उतने सोने के दाने भरे होतें जीवन भर की गरीबी मिट जाती।' उसकी समझ में आ गया था, कि दान देने से संपन्नता बढ़ती है घटती नहीं। बसंत के आगमन की खुशी में पेड़– लताएं अपने तमाम पत्ते न्यौछावर कर देते हैं, लेकिन कुछ ही दिनों बाद ये पेड़ पुनः नये पत्तों से भरपूर हो उठते हैं। अभिप्राय यह है कि दिया हुआ दान पुनः किसी न किसी माध्यम से हमें मिलता है।

– कैलाश 'मानव'

बुजुर्ग - हमारी छत्र छाया

पिता जीवन है, संबल है,
शक्ति है, पिता सृष्टि के निर्माण की अभिव्यक्ति है, पिता सुरक्षा है, सिर पर हाथ है,
पिता नहीं तो जीवन अनाथ है।

एक राजा था। उसने सोचा कि राज्य में वृद्ध लोग भार हैं। 50 साल की उम्र के बाद कोई काम तो करते नहीं। अगर वृद्धों से हमारे राज्य को मुक्ति दिला दें तो कई प्रकार के संसाधनों और सामग्री की बचत हो जाएगी।

राजा युवा था, उसके मंत्री भी युवा थे। इसलिए उसके मन में ऐसी बात आई और आदेश दे दिया कि सभी वृद्धजनों को यहाँ से निकाल दो। सभी बूढ़ों को देश छोड़कर जाना पड़ा। पूरा राज्य बुजुर्गविहीन हो गया। लेकिन एक लड़का था, उसे अपने

वृद्ध पिता से बहुत प्यार था, इसलिए उसने उसे कमरे में छुपा कर रख लिया। कुछ समय गुजरा.....राज्य में भयंकर अकाल पड़ा, भूखमरी फैल गई। लोग काल के ग्रास बनने लगे। उस पीड़ा में उस वृद्ध पिता ने अपने बेटे को बुलाकर कहा कि तुम ऐसा करो कि सड़क के दो तरफ हल जोतो। आज्ञाकारी पुत्र ने दूसरों को भी इस काम के लिए बोला – लेकिन किसी ने सहयोग नहीं किया। अंत में बेटा खुद अपने सामर्थ्य से हल लेकर सड़क किनारे जोतने लगा। थोड़े समय में ही उसमें से फसल उगने लगी। यह देख लोगों में चर्चा होने लगी। राज ने उस लड़के को बुलाकर पूछा –यह कैसे हुआ?

लड़के ने कहा–यह तो मेरे पिताजी ने कहा था। राजा ने उसके पिता को बुलाया। पहले तो सोचा कि यह बच कैसे गया? लेकिन इस बात को नजरअंदाज करते हुए राजा ने पूछा कि अनाज कैसे उगा? तो पिता कहता है–मैं जानता था कि सड़क पर चलने वाली गाड़ियों से बहुत–सा अनाज नीचे गिरा हुआ है। अगर भूमि जोत दी गई तो फसल उग आएगी। राजा उसकी बुद्धिमता और अनुभव को जानकर प्रसन्न हुए। वृद्धजन और बड़े–बुजुर्गों का जब तक हम सम्मान करेंगे, तब तक हमारे परिवार में किसी भी तरह की तकलीफ नहीं आयेगी। वृद्धजनों के आशीर्वाद से भगवान प्रसन्न होते हैं।

पिता रोटी है, कपड़ा है,
मकान है,
पिता नन्हें से परिन्दे का
बड़ा आसमान है।
पिता अपनी
इच्छाओं का हनन
और परिवार की पूर्ति है,
पिता रक्त में दिए हुए
संस्कारों की मूर्ति है।।

–सेवक प्रशान्त भैया

एक सेवाभावी मानव की जीवनी

(वरिष्ठ पत्रकार श्री सुरेश जी गोयल द्वारा लिखित-झीनी-झीनी रोशनी से)

बोरे जब उदयपुर पहुँच गये तब प्रश्न यह खड़ा हो गया कि इन वस्त्रों का वितरण कहां और कैसे किया जाय। उदयपुर में गरीब बस्तियां तो बहुत थी मगर सिटी रेलवे स्टेशन के पास अवस्थित झुग्गी झोंपड़ियों में रहने वालों की स्थिति सबसे दयनीय प्रकट होती थी। वस्त्र वितरण की शुरुआत इसी बस्ती से करने का निश्चय किया गया।

पहले दिन एक बोरे में कुछ वस्त्र भर कर वहां ले गये। लोगों को जब बताया कि सबको निःशुल्क कपड़े वितरित किये जायेंगे तो देखते ही देखते जमघट हो गया। कैलाश ने इन्हें कतार में खड़ा होने को कहा। जब सब लोग कतारबद्ध हो गये तो एक–एक कर सभी को वस्त्र वितरित कर दिये। कैलाश को यह कार्य करते हुए अत्यन्त प्रसन्नता व सन्तुष्टि का अनुभव हुआ। उसने खाली बोरा झटकते हुए अगले दिन वापस आने को कहा और अपने साथियों के साथ लौट गया।

अगले दिन वापस वह बोरा लेकर वहां पहुँचा तो एक लड़के ने उसे आते हुए देख लिया। कैलाश की भी नजरें उस पर पड़ गई थी, वह एक दिन पूर्व वितरित किये गये कपड़े ही पहने हुए था। थोड़ी ही देर में यह लड़का कपड़े उतार कर नंग धड़ंग हो कतार में खड़ा हो गया। कैलाश उसे पहचान गया और उसका मन खिन्न हो उठा। उसने इस लड़के को डांटा कि अभी तो तू कपड़े पहना था, मुझे आता देख कपड़े उतार कर आ गया, यह बात अच्छी नहीं, ऐसा करोगे तो दूसरे लोगों को नहीं मिलेगा।

शीघ्र ही सब कपड़े वितरित कर वह लौट गया। एक दिन पूर्व जो प्रसन्नता हुई थी उसका स्थान विषाद ने ले लिया था। उसने अपने मन को समझाने की कोशिश की कि यह मानव स्वभाव है, गरीब हो या अमीर, हर कोई अधिक से अधिक पाना चाहता है, चाहे उसका हकदार हो या न हो, या दूसरों का हक मारा जा रहा हो। इस घटना को भुला अगले तीन–चार दिनों में बीसलपुर से लाये तमाम वस्त्र अलग–अलग क्षेत्रों में बांट दिये। कैलाश को मजा आ गया और मन में ललक जाग गई कि ज्यादा से ज्यादा कपड़े लाए और वितरित करे।

अंश - 080

मिटी वेदना, लौटी मुसकान

देवऋषि रावत की चार साल की बिटिया वैष्णवी ने जुलाई 2017 में स्कूल जाना प्रारम्भ किया। खिलखिलाती मुस्कान और तुतलाती इसकी मीठी बोली ने कुछ ही दिनों में उसे सहपाठियों और शिक्षकों की लाड़ली बना दिया। मध्यप्रदेश के ग्वालियर जिले के डबरा निवासी माता–पिता की आंखों का तारा वैष्णवी छोटी उम्र में ही बड़े सपने देखने लगी थी, वह प्रायः कहती कि पढ़–लिखकर चाहें किसी क्षेत्र में जाए, दीन–दुखियों की सेवा को अपना पहला फर्ज बनाएगी लेकिन विधना को उसके बडे सपने शायद रास नहीं आए। एक दुर्घटना ने उसके सपनों के पंख काट दिए। स्कूली जीवन का एक महिना भी पूरा नहीं हुआ था कि 20 जुलाई 2017 को छुट्टी के बाद स्कूल द्वार से बाहर बजरी से लदे अनियंत्रित ट्रेक्टर ने उसे चपेट में ले लिया। बांया पांव बुरी तरह कुचल गया। घटना का पता चलते ही जब पिता हॉस्पीटल पहुंचे, छटपटाती मासूम को देख बेहोश हो गए। लोगों ने पिता–पुत्री को अस्पताल पहुंचाया। वैष्णवी पैर खोकर एक माह बाद घर लौटी। कटे पांव को देख रोती रहती, सोचती कैसे कटेगी आगे की जिंदगी । स्कूल भी छूट गया, सपने भी टूट गए। मां– बाप भी दुःखी थे। कुछ दिनों बाद उम्मीद की किरण बन एक महिला देवऋषि के घर आई। जिसने नारायण सेवा संस्थान में निःशुल्क कृत्रिम अंग लगाए थे बिना देरी किये वैष्णवी को माता–पिता उदयपुर लेकर आएं। यहां डॉ. मानस रंजन जी साहू ने उसके लिए विशेष कृत्रिम पांव बनाया, उसे लगानें– खोलने और पहनकर चलने की कई दिनों तक ट्रेनिंग दी। वैष्णवी जब उस कृत्रिम पांव को पहनकर चलने लगी तो उसके होठों पर अमिट मुस्कान थी। माता–पिता भी खुश थे। उन्होंने संस्थान का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि वैष्णवी अब अपने सपने जरूर सच करेगी।

अनेक बीमारियों की जानकारी देते हैं –नाखून

आपने कभी इस बात पर ध्यान दिया हो कि आपके नाखून भी बीमार हो सकते हैं। नाखून कैरटिन से बने होते हैं। यह एक तरह का पोषक तत्व है, जो बालों और त्वचा में होता है। शरीर में पोषक तत्वों की कमी या बीमारी होने पर कैरटिन की सतह प्रभावित होने लगती है।

स्वास्थ्य का संकेत –नाखूनों में किसी भी प्रकार का कोई परिवर्तन हो तो स्वास्थ्य के प्रति सचेत हो जाना चाहिए। दुनियाभर में हुए कुछ शोधों के अनुसार यह तथ्य प्रमाणित हो चुका है कि विभिन्न बीमारियों में नाखूनों का रंग बदल जाता है। जैसे सफेद रंग के नाखून लीवर से संबंधित बीमारियों जैसे हेपेटाइटिस की खबर देते हैं। अगर हम ये कहें कि नाखून आपके सेहत का हाल बयान करते हैं तो ये गलत नहीं होगा। जानिए नाखूनों से कैसे मिलता है स्वास्थ्य का संकेत

1 पीले नाखून–पीले रंग के नाखून जो आकार में मोटे हो और धीरे–धीरे बढ़ते हो, फेफड़े संबंधी बीमारियों के परिचायक होते हैं। साथ ही नाखूनों का पीलापन फंगल इन्फेक्शन और कुछ मामलों में थायरॉयड, सिरोसिस जैसी त्वचा की समस्या जैसे गंभीर रोगों का भी लक्षण हो सकता है। इसके अलावा नाखूनों का पीलापन पीलिया के लक्षण को भी बताता है।

2 आधे सफेद और आधे गुलाबी नाखून – किडनी से संबंधित बीमारियों का संकेत देते हैं। इसके अलावा यदि आपके नाखूनों की पर्त सफेद है तो यह लक्षण शरीर में खून की कमी (एनीमिया) का लक्षण होता है।

3 नाखूनों में सफेद धब्बे – कई बार आपने देखा होगा कि आपके नाखूनों में सफेद धब्बे नजर आने लगते हैं। और धीरे–धीरे नाखूनों पर सफेद धब्बे बढ़ने लगते हैं, यह पीलिया या लिवर संबंधी अन्य रोगों की ओर इशारा करते हैं।

4 कमजोर नाखून – कमजोर या नाजुक नाखून शरीर में कैल्शियम की कमी को दर्शाते हैं। इसके अलावा अगर ये सूखे हो या बहुत जल्दी टूट जाएं, तो यह आपके शरीर में विटामिन 'सी', फोलिक एसिड, और प्रोटीन की कमी को दर्शाता है। इसके अलावा आपको थायराइड की समस्या हो सकती है।

5 भूरे या काले धब्बे – भूरे या काले धब्बे आमतौर पर नाखून के आस–पास की खाल पर फैल जाते हैं। यह एक बड़ा धब्बा या छोटे–छोटे निशान भी हो सकते हैं। इस तरह के धब्बे हाथ और पैर के अंगूठों पर होते हैं। यह धब्बे त्वचा या आंख की रसौली की ओर इशारा करते है।

6 नाखूनों में नीलापन – कई बार शरीर में ऑक्सीजन का संचार ठीक प्रकार से नहीं होता है जिसके कारण नाखूनों का रंग नीला होने लगता है। नाखूनों को नीला होना फेफड़ों में संक्रमण, निमोनिया या दिल से संबंधित किसी रोग का लक्षण हो सकता है।

यदि आप को किसी नाखून का ऊपरी सिरा फटा दिखाई पडे या नाखून में पीलापन नजर आए या कभी नाखून चम्मच जैसा दिखे, नाखून धंसा नजर आने लगे तो आपको तुंरत डॉक्टर के पास जाना चाहिए और सलाह लेना चाहिए।

(यह जानकारी विविध स्रोतों से प्राप्त है कृपया चिकित्सक से सलाह अवश्य लें।)

अनुभव अमृतम्

एक हजार किलोमीटर उदयपुर से दूर, किराये की कार ली, शायद राजेश साथ में था। एक साथी और साथ में थे। नवकार मंत्र पढकर रवाना हुए, बीच रास्ते में कोई परिचित मिल गये। जय जिनेन्द्र, जय श्रीकृष्णा किया, साथ में भोजन किया। सेठ जी कहाँ पधार रहे हो? बोले–बोले मैं तो भाणजी के विवाह में मायरा भरने जा रहा हूँ। मेरी भाणजी कल्पना है, उसका विवाह तीन दिन बाद अजमेर में होने वाला है। मैं मायरे का समान लेकर अजमेर जा रहा हूँ, भाणजी के मायरे में जा रहे हो। किराये की गाड़ी में क्यों ? अपनी गाडी में क्यों नहीं ?

बात तो तुम्हारी सही है, तुरन्त किसी को कहा–भाई फोन कर जिसकी गाडी चला कर लाये हैं, उसको फोन कर। फोन पर कहा–जो गाड़ी मैं किराये पर लाया हूँ, बेच सकते हो क्या ? हाँ, सेठ साहब मेरे पास तो बहुत गाडियाँ हैं, आप तो व्यापारी है। बेच दूँगा। तो कितने रुपये लेना है? बोले–दो लाख रुपये? बोले–दो लाख तो ज्यादा है। डेढ लाख बोलो तो ले लेते हैं– मारूति गाड़ी उस जमाने में। ये मैं सन् 1989 की बात कर रहा हूँ। हाथों –हाथ टेलीफोन पर सौदा कर लिया। बोले दुकान पर चले जाना, पैसा ले लेना, उसने कहा–किराये की गाडी लेकर मायरा भरने जा रहे हो ? अब ये गाड़ी मेरी हो गयी। अजमेर पधारे, कितनी खुशी? कितना आनन्द? ठाकुर जी करते हैं।

कभी मत कहना मेरा क्या लगता है,
सारा संसार मेरा है।

सियाराममय सब जग जानी।
करहुं प्रणाम जोरि जुग पानी।।

ये गोस्वामी तुलसीदास जी की वो आवाज है। जो साढे पाँच हजार साल पहले तुलसीदास महाराज ने वाराणसी के अस्सी घाट पर लिखी। जिस घाट पर जाने का मुझे भी सौभाग्य प्राप्त हुआ। जिस घाट को नमन किया, जिस घाट की मिटटी मेरे माथे पर लगायी, उसी अस्सी घाट पर तुलसीदास ने लिखा, किसी को राजी करने के लिए नहीं, किसी को प्रसन्न करने के लिए नहीं, ज्ञान का बखान करने के लिए नहीं।

शान्तः सुखायः
तुलसी रघुनाथ गाथा,
भाषा निबंध मति
मंजुल नात नेति।।

सेवा ईश्वरीय उपहार– 433 (कैलाश 'मानव')

आपश्री का सहयोग मिले : प्रार्थना

भारत के विभिन्न शहरों में 720 स्नेह मिलन
2026 के अंत तक 720 मिलन समारोह आयोजित करने का संकल्प

960 शिविरों द्वारा निःशुल्क जांच एवं उपचार
2026 के अंत तक 960 आर्टिफिशियल लिम्ब केम्प लगाये जायेंगे।

1200 नई शाखाएं
2026 के अंत तक 1200 नई शाखाएं खोलने का लक्ष्य।

120 कथाएं
2026 के अंत तक विभिन्न शहरों में 120 कथाएं आयोजित की जायेंगी।

वर्ल्ड ऑफ ह्यूमैनिटी
2026 के अंत तक वर्ल्ड ऑफ ह्यूमैनिटी का निर्माण पूर्ण होकर 10 हजार से अधिक लोग लाभान्वित होंगे।

नारायण सेवा केन्द्र
आगामी 5 वर्षों में संस्थान के वर्तमान में संचालित सभी केन्द्रों में रोजगारोन्मुखी प्रशिक्षण आरम्भ किये जायेंगे।

विदेश में सेवा प्रकल्पों का विस्तार

26 देशों में पंजीयन
वर्ष 2026 के अंत तक 26 देशों में संस्थान के पंजीकृत कार्यालय खोलने का लक्ष्य

6 से सेवा केन्द्र का शुभारम्भ
6 से अधिक देशों में केन्द्र स्थापित कर संस्थान सेवाओं को देगा विस्तार

20 हजार दिव्यांगों को लाभ
विदेश के 20 हजार से अधिक जरूरतमंद एवं रोगियों को लाभान्वित करने का होगा प्रयास

अपने बैंक खाते से संस्थान के बैंक खाते में जमा करें - अपना दान

आप अपना दान सहयोग नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर के नाम से संस्थान के बैंक खातों में सीधे भी जमा करवाकर PAY IN SLIP भेजकर सूचित कर सकते हैं, जिससे दान प्राप्ति रसीद आपको भेजी जा सके।

संस्थान पेन कार्ड नम्बर AAATN4183F, टेन नम्बर JDHN01027F

Bank Name	Branch Address	RTGS/NEFT Code	Account
State Bank of India	H.M.Sector-4	SBIN0011406	31505501196
ICICI Bank	Madhuban	ICIC0000045	004501000829
Punjab National Bank	KalajiGoraji	PUNB0297300	2973000100029801
Union Bank of India	Udaipur Main	UBIN0531014	310102050000148

संस्थान को दिया गया दान-सहयोग आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80G के अन्तर्गत 50 प्रतिशत नियमानुसार छूट के योग्य है।

मन के जीते जीत सदा (दैनिक समाचार-पत्र) प्रकाशक : कैलाश चन्द्र अग्रवाल 483, सेवाधाम, सेवानगर, हिरण मगरी, से. 4, उदयपुर (राज.) स्वामित्व : नारायण सेवा संस्थान प्रकाशन स्थल : ई, डी-71 बप्पा रावल नगर, हि.म. सेक्टर-6, उदयपुर
मुद्रक : न्यूट्रेक ऑफसेट प्रिंटर्स, 13, भोपा मगरी, बी.एस.एन.एल. एक्सचेंज के पास, हिरण मगरी, सेक्टर - 3 उदयपुर (राज.) के लिए नारायण प्रिंटिंग प्रेस, सेवा महातीर्थ, लियो का गुडा, उदयपुर
सम्पादक : लक्ष्मीलाल गाडरी, मो. +91-294-6622222,+91-7023509999 • ई-मेल : mankijeet2015@gmail.com•आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353, • डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023